बिल्टमोर पीटरसन

शिकागो की अद्भुत इमारतें

सिद्धार्थ बालाकृष्ण

शिकागो दशकों से अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध रहा है। फ्रैंक लॉयड राइट द्वारा प्रेयरी शैली में डिज़ाइन किए अद्भुत रॉबी हाउस से लेकर बांग्लादेशी अमेरिकी वास्तुकार फ़ज़लुर रहमान खान की उत्कृष्ट रचना सीयर्स टावर तक- डिज़ाइन, स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग और वास्तुकला की दुनिया के नामी लोगों ने इलिनॉय के इस शहर में इमारतें तैयार कीं। इस परम्परा को देखते हुए कोई आश्चर्य नहीं कि आधुनिक वास्तुकारों ने भी अपने काम के लिए इसी शहर को चुना ।

अगर आपकी रुचि कला और वास्तुविज्ञान के नए स्वरूपों में है तो शिकागो की सैर की शुरुआत शहर के बीचोंबीच करीब 10 हैक्टेयर में फैले मिलेनियम पार्क से करें जहां वास्तुकला और कला का विलक्षण संग्रह मौजूद है।

मिलेनियम पार्क में पहुंचने पर मेरी निगाह सबसे पहले एक कोने में मौजूद विशाल इस्पाती मेहराब पर टिकी। ''क्लाउड गेट'' नाम के इस शिल्प की प्रेरणा शिल्पी अनीश कपूर को पारे की बूंद से मिली लेकिन शिकागो वाले इसे प्यार से ''द बीन'' कहते हैं। 2 करोड़ डॉलर से अधिक की लागत से बने चमकते

जेफ रावटसन © ए.पी. ड्ब्ल्यू ड्ब्ल्यू पी.

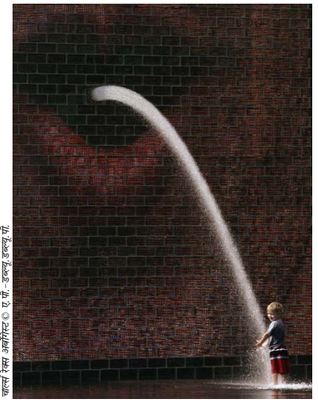

पीटर ड्रेक्सलर-ग्रे © टोटोग्राफी सर्व्हे, ड्ब्ल्यू पी.

ऊपर: शिकागो के मिलेनियम पार्क में जे प्रित्ज़कर पॅविलियन।

बिल्कुल बाएं: शिकागो व्हाइट सॉक्स बेसबाल टीम का साथ देने वाले संदेश के साथ चमकता शिकागो का सी.एन.ए. प्लाज़ा। बाईं ओर सीयर्स टॉवर है और दाईं ओर आगे की ओर बकिंघम फ़ाउंटेन है।

बाएं: मिलेनियम पार्क के क्राउन फ़ाउंटेन में खेलता एक बच्चा।

नीचे: शिकागो में आकाश छूती इमारतों का एक दृश्य।

110 टन के इस शिल्प में आसपास की इमारतें, आते-जाते लोग और आकाश के प्रतिबिम्ब दिखते हैं। इसे बनाने में इस्पात की जोड़रहित पॉलिश की हुई चादरों का इस्तेमाल हुआ है। 3.6 मीटर ऊंचा एक मेहराब शिल्प के नीचे स्थित अवतल कक्ष में आने को आमंत्रित करता है जहां दर्शक कक्ष की दर्पण जैसी दीवारों को छूकर, अलग-अलग कोणों से अपने प्रतिबिम्ब देख सकते हैं।

क्लाउड गेट के पास ही शिकागो की जातीय विविधता को सुरुचिपूर्ण ढंग से दिखाने वाला क्राउन फाउण्टेन है। स्पेनिश शिल्पी जॉम प्लेन्सा के बनाए इस फव्वारे में 15 मीटर ऊंची दो कांच की मीनारों के बीच एक उथला कुंड है। मीनारों में शहर के 1000 वासियों के चेहरों के निरन्तर बदलते वीडियो बिम्ब हैं। इन विशालकाय चेहरों के ज्यादा पास गए कि भीगे! जी हां, इन चेहरों के मुंहों से अचानक पानी की धार छूटती है! खैर कुछ सेकेंड बाद धार हल्की होकर बंद भी हो जाती है। बच्चे घंटों इन धारों के छूटने का अंदाज़ा लगाने और उनकी बौछार से बचने के खेल का मज़ा लेते हैं।

प्लेंसा बताते हैं कि यह अनूठा फव्वारा बनाने की प्रेरणा उन्हें रोम के फव्वारों से मिली। ''लेकिन उन फव्वारों में बनी आकृतियां पत्थरों से तराशी गई है और 500 साल से उनकी मुद्राएं वैसी की वैसी हैं। आज प्रौद्योगिकी हमें नए विचारों को आजमाने की सुविधा उपलब्ध करवाती है।'' वह स्पष्ट करते हैं, ''हम सभी के दो पक्ष हैं- एक संसार को दिखाया जाने वाला और दूसरा सनकी। हम सभी में सनकी चेहरे हमारा ही अंग हैं। यह अनियंत्रित होना ही कला का सब से सुंदर अंश भी है। मुंह से बहती धारा जीवनधारा है और मेरे लिए वह बहुत सुन्दर है।''

रात के समय आसपास की गगनचुम्बी इमारतें कुंड में हज़ारों टिमटिमाते तारों

बाएं और नीचे: मिलेनियम पार्क में अनीश कपूर का स्टेनलेस स्टील का 110 टन का शिल्प क्लाउड गेट।

के रूप में प्रतिबिम्बित होती हैं। प्लेंसा ने एक बार कहा था, ''फव्वारा प्रकृति की स्मृति है, शहर में उभरा पहाड़ी धारा का अद्भुत स्वर।''

फव्वारे से थोड़ी ही दूरी पर वास्तुकार फ्रैंक गेहरी द्वारा डिज़ाइन किया जे प्रित्ज़कर पॅविलियन है जो संसार के सबसे बेहतर आउटडोर कंसर्ट स्थलों के रूप में जाना जाता है। यदि आप भाग्यशाली हों तो कन्सर्ट से भी रूबरू हो सकते हैं। ठंडी, हरी घास पर बैठे 5 लाख डॉलर कीमत की ध्वनि प्रणाली से वाद्यवृंद संगीत सुनना एक कमाल का अनुभव है। अपने ऑडिटोरियम की ध्वनि छतरी के चलते इसे दुनिया में तकनीकी लिहाज से यह आउटडोर कन्सर्ट में सबसे अगुआ माना जाता है। व्यवसाय केंद्र के पास ही इस तरह के संगीत स्थल की स्थापना का विचार शानदार है- मैंने पार्क से गुजरते कई लोगों को संगीत का आनन्द लेते और इस अचानक मिले इस उपहार के लिए कृतज्ञ होते देखा है।

रात के समय यह सभागार एक सौम्य नारंगी दमक से घिरा दिखता है जो इसके डिज़ाइन के सौंदर्य को उभार देती है। लगता है गेहरी ने जर्मन दार्शनिक गेटे की उक्ति- वास्तुकला फ्रोज़न संगीत की तरह है- को साकार कर दिया। गेहरी की स्थापत्य शैली को टैक्नो-बारॉक नाम दिया गया है। इस शैली में रेखीय आकारों को तिलांजलि देकर समकालीन प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके बारॉक चर्च की उत्फुल्लता का आधुनिक संस्करण रचा जाता है जिसमें वलयाकार आकार आंखों को ढांचे की बारीकियों की परख के लिए आमंत्रित करते हैं। सभागार के सिर पर जैसे स्टेनलेस स्टील के रिबन की टोपी रखी है जो मंच को तीन ओर से घेरे है और छत की ओर इस्पाती पाइपों के उस जाल से जुड़ी है जिस पर ध्वनि प्रणाली टिकी है। पाइपों का यह जाल सभागार की 4000 स्थिर सीटों और बाहर के लॉन तक फैला है जहां 7000 लोग बैठ सकते हैं।

पार्क की सैर करने के बाद पास ही स्थित सीयर्स टावर देखना न भूलें। खान की ख्याति को अमर करने वाली यह इमारत किराएदारों को 1973 में ही दे दी गई थी लेकिन निर्माण पूरा होने में एक साल और लगा था। प्रसिद्ध रिटेल कंपनी सीयर्स रोबक एंड कंपनी के लिए बनाई गई यह 110 मंजिला इमारत 442 मीटर ऊंची है। 1996 तक यह संसार की सबसे ऊंची इमारत थी, फिर क्वालालम्पुर, मलयेशिया की पेट्रोनाज़ टावर (452 मीटर) ने इसे दूसरे स्थान पर धकेल दिया।

खान की गगनचुम्बी इमारतों से अमेरिका में विशाल इमारतों के निर्माण का एक नया दौर शुरू हुआ। उन्होंने एक बार कहा था कि ये इमारतें ''लोगों को

नीचे बाएं: ए पी - इन्फ्लोटेबल

आकाश में जीने और रहने'' का सामर्थ्य देती हैं। शिकागो वाले अक्सर चुटकी लेते हैं कि इन इमारतों की सबसे ऊपरी मंजिलों पर रहने-काम करने वाले लोग फोन करके दरबान से पूछते हैं कि बाहर बारिश हो रही है या बर्फ गिर रही है, क्योंकि वे खुद तो बादलों से ऊपर मौजूद होते हैं जहां उन्हें कुछ खास पता नहीं चल पाता।

सीयर्स टावर की विशेषता ''बंडल्ड ट्यूब्स'' तकनीक का उपयोग है जो तेज़ हवाओं वाले इस शहर में इमारत को स्थिर रखती है। पूरा ढांचा अलग-अलग ऊंचाई के नौ वर्गाकार स्तम्भों से बना है। इमारत के दो विकर्णों पर आमने-सामने स्थित दो स्तम्भ 50वीं मंज़िल पर रुक जाते हैं और पहली सीढ़ी जैसे दिखते हैं। दूसरी सीढ़ी है 66वीं मंज़िल पर है जहां दो और विकर्ण खत्म होते हैं। तीसरी और अंतिम सीढ़ी 90वीं मंज़िल पर है जहां तीन टॉवर खत्म होते हैं। अंत में इमारत का आकाश को भेदता सा 20 मंज़िला शीर्ष बचता है। इस अनूठी निर्माण शैली का परिणाम यह है कि सीयर्स टावर के अलग-अलग दिशाओं से लिए गए चित्रों में इतना अंतर होता है कि कई बार लोग पहचान ही नहीं पाते कि यह उनकी देखीभाली इमारत की ही तस्वीर है।

1999 में मानव-मकड़ी कहे जाने वाले फ्रांसीसी एलां रॉबर्त ने बिना सुरक्षा उपकरणों का सहारा लिए, सिर्फ अपने हाथों के सहारे सीयर्स टावर के शीर्ष पर चढ़ने की घोषणा की थी लेकिन जब वह ऊपर की ओर बढ़ रहे थे तो घने कोहरे के कारण ऊपर की 20 मंज़िलों की कांच और इस्पात से बनी सतह काफी फिसलन भरी हो गई और यह अभियान अधूरा ही रह गया।

एम. रॉबर्ट ग्रीन © ई.पी. ड्रायर ड्रायर्स

डेली सेंटर प्लाज़ा में बेसबाल कैप से सजाई गई पिकासो की मूर्ति।

डेली सेंटर प्लाज़ा स्थित पिकासो के 15 मीटर ऊंचे मूर्तिशिल्प को देखे बिना शिकागो की वास्तुकला यात्रा पूरी नहीं कही जा सकती। यह तो कोई नहीं बता पाता कि यह आकृति आखिर किसकी है- यह पक्षी की, घोड़े की, स्त्री की या यह पूरी तरह अमूर्त शिल्प हो सकता है? पिकासो ने ''शिकागो के बाशिंदों'' के लिए उपहार के तौर पर इस शिल्प की 42 इंची प्रतिकृति भी तैयार की थी। वह भी जानते थे कि नई तरह का शिल्प और डिज़ाइन प्रस्तुत करने के लिए शिकागो बेहतर जगह है। शिल्प का निर्माण युनाइटेड स्टेट्स स्टील कॉर्पोरेशन ने इंडियाना में किया था जहां पहले इसे तैयार किया गया, फिर इसके अलग-अलग हिस्से कर इसे डेली प्लाज़ा लाकर फिर से जोड़ा गया।

अपनी स्थापत्य-यात्रा का समापन अमेरिकी वास्तुकार मीज़ वान डेर रोह और लुइ सलिवान द्वारा डिज़ाइन किए और शहरी विकास की चपेट में आने से बची रह गई आखिरी इमारतों को देखते हुए करें। किसी जमाने में शहर में इन वास्तुकारों द्वारा डिज़ाइन की गईं कई इमारतें थीं लेकिन नई व्यावसायिक इमारतों, विस्तार और आधुनिकता की मांगों के चलते कई इमारतें खत्म ही हो गईं। रोह ने पहलेपहल लेकशोर ड्राइव अपार्टमेंट्स के सामने के हिस्से में कांच का जो व्यापक प्रयोग किया था, अब वह संसारभर में आधुनिक कार्यालयों और व्यावसायिक इमारतों की पहचान बन चुका है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

मिलेनियम पार्क
http://www.millenniumpark.org/

द सीयर्स टॉवर
http://www.thesearstower.com/

शिकागो वास्तुकला का आश्चर्यलोक है। डिज़ाइनरों, इंजीनियरों, वास्तुकारों के बीच चलती कुछ नया करने की होड़ के कारण कला और वास्तुशिल्प में रुचि रखने वालों के लिए यह शहर एक स्थायी प्रदर्शनी है। शिकागो की इमारतें इस बात की गवाह हैं कि मनुष्य के मानस को केवल उसकी अपनी कल्पना ही सीमाबद्ध करती है।

सिद्धार्थ बालाकृष्ण *नई दिल्ली स्थित एक परामर्शदाता फर्म में काम करते हैं और स्वतंत्र यात्रा लेखक हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov *पर भेजिए।*

सर्द हवाओं और गर्मजोशी वाला शहर

सुरेन्द्र कुमार

शिकागो शहर के दो चेहरे हैं- एक जाड़ों वाला और दूसरा वह जो गर्मियों में दिखता है। जाड़ों में तापमान शून्य से 20 से 30 डिग्री नीचे होता है और सर्द हवाएं चलती हैं, जो इस तरह की ठंड के आदी नहीं है उनकी तो हालत खराब हो जाए। लेकिन पहले जाड़े के बाद आपको शिकागो के मौसम की आदत पड़ जाती है। हमें साउथ मिशिगन एवेन्यू पर 19वीं मंजिल पर स्थित अपने पेंटहाउस से हिमपात देखना बहुत अच्छा लगता था। ग्रांट पार्क और पूरा लेक मिशिगन क्षेत्र बर्फ के विराट, मोटे, सफेद कम्बल में बदल जाता था। मिलेनियम पार्क और मैग्निफिसेंट माइल पर पत्तों से विहीन पेड़ नन्ही क्रिसमस रोशनियों के साथ अद्भुत सुंदर दृश्य रचते। कड़ाके के जाड़े में भी संगीत और ऑपेरा के रसिकों का उत्साह कम न होता। शिकागो सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा हॉल और ऑपेरा हॉल में हर शाम उनका जमावड़ा होता।

साभार: सुरेंद्र कुमार

सुरेंद्र कुमार (बाएं) शिकागो के एक रेस्तरां हाउस ऑफ़ ब्लूज़ में अभिनेता देवानंद के साथ।

लेकिन जून के अंत तक, मिलेनियम पार्क और ग्रांट पार्क, यहां तक कि दाईं ओर तारामंडल से फील्ड म्यूज़ियम, और याट क्लब से नेवी पायर तक पूरे 180 डिग्री तक का दृश्य, हरियाली, रंगबिरंगे ट्यूलिपों और सुगंधित लिलियों से खिल उठता। दौड़ते, टहलते, साइकिलें चलाते लोगों का हजूम दिखता। न जाने कितनी बार मैं प्रकृति के सौंदर्य को निहारता, शिकागो की सुंदर क्षितिज रेखा पर मुग्ध होता, जैज़ या गॉस्पेल संगीत का रसपान करता, देश-विदेश के व्यंजनों के स्वाद लेता, चा-चा-चा, फ्लैमेंको और सांबा सीखते लोगों को देखता एक छोर से दूसरे छोर तक घूमा हूं। हज़ारों लोग आर्ट्स काउंसिल म्यूजियम देखने जाते और लाखों लोग डिपार्टमेंटल स्टोर में अच्छी सौदेबाजी का प्रयास करते। गर्मियों में मिशिगन झील में नावों का जमावड़ा लगता और आकाश हवाई जहाजों से गुलजार रहता। खुद आयोजित की चर्चाओं और वार्ताओं के माध्यम से कुछ अद्भुत विद्वानों से हुई मुलाकातों को याद करके आज भी खुशी होती है। जाड़ों में शिकागो भले ही बर्फ की चादर ओढ़ लेता हो, लेकिन उसके बाशिंदों की तरह ही उसका दिल गर्मजोशी से धड़कता रहता है।

सुरेन्द्र कुमार *फरवरी 2000 से अगस्त 2003 तक शिकागो में भारत के कान्सुल जनरल रहे। आजकल वह भारत के विदेश मंत्रालय के फॉरेन सर्विस इंस्टीट्यूट के डीन हैं।*